त्रिभोनम् केन्द्रम् ३ राशि से कम केन्द्र होवे तो दोभवति आप भुज रेजा है. त्रिभोर्ध्वम्
३ राशि से अधिक होवे तो इसे विशोध्यम् ६ राशि में हीन करके तदा दोस्यात्
तब भुज होता है. अंकाधिकं ९ राशि से अधिक होवे तो चक्रत विशोध्यम्
१२ राशि में हीन करके तदा दोस्यात् तब भुज होता है. भुजोनं भुज
करके हीनं जो त्रिभम् ३ राशा है वह कोटिस्यात् कोटि होती है.
त्रित्रिभे ३।३ राशियों का एकैकम् पदम् स्यात् एकैक पद होता है।।
अष्टाविंशा सूर्य मन्दोच्चं भवेत ।७८ अंश का सूर्य मन्दोच्च होता है -
ग्रहवर्जितं मन्दोच्चं ग्रह करके हीन जो मन्दोच्च है वधे तदारव्यं
विवेकि उसकी संज्ञा को केन्द्रं निगदितं केन्द्र कहते हैं क्रियतुलादि
केन्द्रे मेषतुलादि ६।६ राशि पर्यन्त केन्द्र होवे तो स्वम् ऋणम्
फलम् स्यात् धन ऋण मन्द फल होता है अथ रवे केन्द्रम् विधेयम्
इसके उपरान्त सूर्य केन्द्र रख कर तद्भुजभाग उसके भुजांश का -
खेचर नव नवमांश करके उन नग्ना नखा २० में हीन करके जो राक
से निकाला गुणन फल ते पृथक स्थाप्य उसको पृथक रखकर तद्गोषेण
एक स्थान वाले का नवमांश करके हीन जो नगगेषुभि ५७ अंश है
उसका द्वितिय स्थान गुणन फल में परिहृत भाग लेके जो अंशादि के
फलम् स्यात वह अंशादि मन्द फल होता है १।

सायन भाग सूर्ये अयनांश युक्त सूर्ये जिसदिन मेषादि गे सति मेष राशी
के आदि में होवे उसदिन कि, या दिनार्द्ध जा जो दिनार्द्ध से प्राप्त द्वादशां
गुल कि, आभा छाया है सा पलभा भवेत् वह पलभा होती है सात्रिस्था
उस पलभा को ३ स्थान में रखकर एक स्थान में दशभि १० से द्वितिय
स्थान में भुजंगे ८ से तृतिय स्थान में दिग्भि १० से हता गुणाकर ततः
अन्त्या गुणो धृता कार्या अन्त गुणन फल से ३ का भाग लेके तदा-
चरार्द्धानि स्यु तब चर खंडा होते होते हैं ॥ सायन उष्णांशु सायन-
सूर्य के भुजर्क्ष संख्य भुज की राशि की संख्या परिमिता चरार्द्ध-
योगो चर खंडो के योग में लव अंशा हियों को भोग्य घातात् भोग्य-
चर खंड से गुणा कर खाग्न्याप्ति ३० का भाग लेके युक्तं युक्त
करने चरम स्यात् पलात्मक चर होता है। ततः तपने तुलाज
षड्मे तदन्तर सायनार्क मेषादि छः ६ राशी पर्यंत होवे तो धनर्णेस्यात्
चर धन क्रम होता है अर्से अन्यथा सायंकाल में विपरीत क्रम से
होता है ॥ २० ५

तत् चरम् उस चर को अलग लिलिप्ति कास्य देयं, सूर्य के विकला में धन ऋण देके, स्पष्ट रवि होता है। तत एवं द्विगुण नवोद्धृतं इसी प्रकार द्विगुणित चर में ९ का भाग लेके मध्यन्दो रेखान्त संस्कृत मध्यम चन्द्रमा के कलास्य देयं कलादियों मे धन ऋण देके चर संस्कृत मध्यम चन्द्रमा होता है भाप्तयत् २७ का भाग लिया जिस्मे ऐसा जो द्युमणि फलं सूर्य का मन्दफल है तत् अपि लवे देयम् उस्को चर संस्कृत मध्यम चन्द्रमा के अंशादियों में धन ऋण देके मन्द संस्कृत मध्यम चन्द्रमा होता है अथ. इसके उपरान्त शक शाकाव्द में वेद ४ आब्धि ४ अब्धि ४ अर्थात् ४४४ ऊन हीन करने से तत; खरस हृत उस्मे ६० का भाग लेके अयनांशास्यु, अयनांश होते हैं ॥ खेचरे सायनार्क अयनांश युक्त सूर्य क्रिय धट रसभे मेष तुलादि ६।६ राशि पर्यन्त होवे तो क्रमसे सौम्य याम्यो गोलौ स्तः, उत्तर दक्षिण गोल होता है अयनलवं नक्रात् कर्कात् च षड्भे मकर कर्कादि ६।६ राशि पर्यंत होवे तो क्रमसे ते अयने स्तः वह उत्तरायन दक्षिणायन होता है अथ इस्के उपरान्त पञ्चेन्दु नाड्य १५ घटि में गोलयो उत्तर दक्षिण गोल के विषे चरपल युतोना कार्या चरपल युक्त हीन करने से तदा धस्नार्द्धं स्यात् तब दिनार्द्ध होता है तत्र युत खगुण उस दिनार्द्ध करके हीन जो ३० घटि हैं वह

तिशार्द्ध स्यात्। रा अर्द्ध होता है अर्थात् इसके उपरांत इषुघ्निः ५ से गुणीत किया जो अक्ष छाया पलभा उसमे अक्षभाया। ऋति पलभा के वर्ग का दशम कवोना कार्या दशमांश हीन करने से इयम्। आरा। पलांशास्यु। वह दक्षिण दिशा के अक्षांश होते हैं ॥२२॥ विधो केन्द्र-चन्द्र केन्द्र का दोर्भाग भुजांशो का षष्ठोन निघ्ना षष्ठमांश करके उन निघ्ना जो खरामा ३० अंश है उसको पृथक स्थाप्य. दो स्थानमें रखकर तन्नखांशा निते उसका नखांश करके हीन जो रसादौ ५६ अंश हैं उसका द्वितिय स्थान गुणन फल में हृता भाग लेके तच्च लवाद्यं फलं स्यात् वह अंशादि मन्दफल होता है ताभ्यां च संस्कृतो तिन मन्द फलो करके संस्कृत जो सूर्य चन्द्रमा है वह स्फुटो रविन्दू स्त स्पष्ट सूर्य-चन्द्रमा होते हैं ॥२३॥

रुद्रा ११ मैं, केन्द्रस्य कोटि जव, केन्द्र के भुज कोटि के अंश करके उस्का खाध्वि जव. वीशाद्यं
भाग. जन निघ्ना कार्या जन निघ्न करके: ते रवे चेत् वह सूर्य होवे तो तर्हि त्रिकध्ना: कार्या
१२ का भाग लेके तदा रवे कलाद्यं गति फलम् स्यात् तव रवि के कलादि गतिफल
होता है चेत् यदि जो शशिन: चन्द्रमा होवे तो तर्हि द्विनिघ्ना: कार्या तव द्विगुणि
तकरके तत: तद नंतर स्वांगांशकेन सहिता च कार्या उस्मे उसी का षष्ठमांश युक्तकरके
तदा चन्द्रगतेकलाद्यं फलं स्यात् तव चन्द्रमा के कलादि गति फल होता है।।
कुलीर मृग षट्क गते केन्द्रे कर्क मकरादि छ:छ राशी पर्यन्त केन्द्र होवे तो क्रमसे
गतौ धनर्णं भवत: गति फल धन ऋण होता है उस्को मध्य गति में धन ऋण
देके सा स्फुट गति भवति वह स्पष्ट गति होती हैं ।। २४।।

भौम मंगल आर्कि शनि इन्द्र बृहस्पति इनकरके विहीन हीन जो, मध्यम रवि मध्य
मार्क है वह स्वार्थ केन्द्र स्पात, वह अपने आद्य केन्द्र होते हैं विंदू
भृग्वोत्‌ उत्क्रम बुध, शुक्र का आद्य केन्द्र पहिले कहदिया है इदं
यह आद्य केन्द्र रसोर्द्ध ६ राशिसे अधिक होवे तो, इनभात् शुद्धं कार्य
१२ राशिमे में शोधित करके तद्दशा: दिनेभक्ता: संत: उसके अंशादि
योमें १५का भाग लेके इह क्रमात् यह क्रमसे रवादि फलं जो
शून्यादि फल मिला तत्परिमित अंक के निचे का गतांक
भवेत् गतांक होताहे आगेका शेष्यांक होताहे इनका अंतर करके
अंसोदश्यद्धी इन क्षय-चयसे हतात् गुणित किया जो शेषात्
शेष अंशादि उसमें वागांक लब्धि १५का भाग लेके लब्धांक
क्षय-चय के विषें हीन युक्त कार्य हीन युक्त करनेसे अंसो
दिगू ह्रत इसमे १० का भाग लेके लब्धं फलात् भवति
अंशादि शीघ्र फल होता है ॥६॥

मृदु केन्द्र भुजांशका मृदुकेन्द्र के भुजांशो में दिनाप्त कार्या ५५ का भाग लेके तदा यत् फलम् तब जो फल मिला तत्परिमित प्रगत अंक स्यात् गतांक होता है तदूनितैष्य तिनकरके हीन जो ऐष्यांक उसमें परिशेष हत शेष अंशादि गुणकर तस्मात् दिनाप्ति युक्त उसमें ५५ का भाग युक्त करके तत: दशभक्त १० का भाग लेके तदा अंशकादि मान्द फलम् भवति तब अंशादि मन्द फल होता है ॥५॥ अथ चल फलस्य दलम् ॥ प्रथम शीघ्रफलार्द्ध कों मध्यमे विदध्यात् मध्यम ग्रहमें धन ऋण देके तस्मात् उससे मान्द फलं साध्यम् ॥ मान्द फल साधकर तत आरविन्दं उस संपूर्ण मन्दफल को मिलाने विदध्यात् ॥ विपरीत कम से धनऋण देके अत: शीघ्र साध्यम: उससे शीघ्रफल साधकर तत् सर्व तत्र विदधीत उस साधे हुये सम्पूर्ण शीघ्रफल कों मन्दफल संस्कृत मध्यमग्रह में धन ऋण देके असौ स्फुट: भवेत् वह ग्रह स्पष्ट होता है

आर्कि शनि असृग् मंगल गुरुणां बृहस्पति इनके मान्दां कालार मन्दांक के अन्तर में क्रमेण क्रमसे शनिको वाणनगे ७५ का मंगल को शरे ५ का बृहस्पति को खरामे ३० का भक्त भाग लेके वृद्ध [illegible] विधो युक्त के [illegible] कालार को [illegible] २ से गुणा कर इष्ट भाजितास्य [illegible] भाग लेके कलाद्यं जो कलादि फल मिला तत प्राप्त है इतो दध्यात् उसको मध्य गति में धन ऋण देके तदासा मृदु स्फुटा गति: भवति तब वह मन्द स्पष्ट गति होती है

भौमात् मंगल से आदि ग्रहो के चलांकविवरम् चालाकालर में क्रमेण क्रमसे मंगल को शर हत् ५ का बुधकौं त्रिवाणा शास्त्रं पचमांश युक्त करके वृहस्पति कौं निहत ३ का शुक्रको ४ का भागलेके शनि को द्विगुणा दश भक्तं कार्यम द्विगुणित करके ५ का भागलेके लब्धे गति शीघ्रफलं स्यात् लब्धांक गतिका शीघ्रफल होताहे धन-क्षय के विषे तद्धीन युक्त उस शीघ्र फल करके हीन युक्त जो मृदु स्फुट मन्द स्पष्ट गति हैं वह स्फुटास्यात् स्पष्ट गति होती हैं चेत् यदि जो ऋण फलं वह ऋण फल अधिक होवेतो तदा ऋणात ऋण फल में पतिता कार्या हीन करके शेषम् वक्रा स्यात् शेष वक्र गति होती हैं ॥१२॥

यदा शुक्रारयो: चल भव: अंक: अंत्य गत: स्यात् जब शुक्र मंगल का चालांक
अन्त का होजाय तो तदा शेषांशका तव शेष अंशादि पृथक स्थाप्य दोस्थान
में रखकर एक स्थान वाला अंक भूम्य ~५ अंश में पातिता च कार्या हीन
करके तयो ये अल्पा तिनमें जो न्यून होवे ते भ्यो वह शुक्र होवे तो
त्रिविहृता ३ का भाग लेके असृग् मंगल होवे तो अष्टाभक्त ५ का भाग लेके
स्वशीघ्र वत् अपने शीघ्रफल के समान स्फुटयो देय शुक्र मंगल में धनऋण
देवे तदा तो स्फुटौ स्त: तव तिन दोनो का शुद्ध स्पष्ट होता है ॥१३॥
चेत् यदि जो कुज बुध भृगुजानां मंगल बुध शुक्र का चलांक अंतिम स्यात्
चलांक अन्त अंत्य का होजाय तो तदा दश हत परि शेषांशा तव शेषादि अंशा
को १० से गुणा करके उसमें क्रमेण क्रमसे मंगल को ७ का बुध को अद्रि ७
को शुक्र को अग्नि ३ का भक्तं भाग लेके फलानि क्रमेण फल क्रमसे मंगल
को इभ दहन ३५ बुध को सप्तगोभि ९७ शुक्र को त्रिबाण ५३ युक्त कार्य
युक्त करके तत गति फलं स्यात् वह गति फल होता है तदा पूर्वनिवे
तब विधि नहि है ॥१४॥

कुजाद्या: क्रमात् मंगल से आदि ग्रहौके= क्रमसे मंगलके त्रिनृपे १६३
बुधके शराजिभि: १४५ बृहस्पति के शरार्के १२५ शुक्रके नगभूपे १६७
शनि के त्रिभवे ११३ चल केन्द्र नवे द्वितिय सीघ्र केन्द्र के अंश होवे तो
वक्र प्रयाति वक्रि होते है तथा तैसे इन अंशो कों भगणात् ३६० में-
पतिते हीन करने से ते मार्गं वजाति उतने अंशो करके मार्गि
होजाते है ॥१५॥ क्षितिज: मंगल के अष्ट यमे २८ अंश बृहस्पति के
इन्द्रै १४ अंश रविज शनिके सप्त चन्द्रै १७ अंश द्वितिय केन्द्र के होवे तो
पूर्व उ देति पूर्वोदय होता है स्वस्वोदय भाग सहीने अपने २
उदयांशो करके हीन जो भगणांशे ३६० अंश है उतने अंशो करके
अपरत्र अस्त प्रयाति पश्चिमास्त होजाते है। रवशरै ५० अंश जिने:
२४ अंश द्वितिय केन्द्र के होवे तो पर पश्चिम दिशा में रा भृगुवो
बुध शुक्र का उदय होता है अद्भादिनै १५५ अंश नगाद्रि भूवि

२१ अंश द्वितिय शीघ्र केन्द्र के होवे तो परे सन्मुख वो बुध शुक्र
का अस्तंस्यात् अस्त होता है तथा अदसनरवे: २०५ अंश स्प
हीन्द्रभि १८३ अंश द्वितिय शीघ्र केन्द्र के होवे तो प्राक् प्राक्
पूर्व दिशा में, सन्मुख वो बुध शुक्र का उदय होता है दिग्
दहने ३१० अंश वद्रसे २५६ अंश द्वितिय शीघ्र केन्द्र के
होवे तो प्राक् [redacted] पूर्व दिशा में सन्मुख वो बुध शुक्र का
अस्तं: स्यात् अस्त होता है वक्रोदयादि गदितांश फल वक्रा
दियो के कहे हुये जो द्वितिय शीघ्र केन्द्र के अंश वह यदि
जो केन्द्रांशका अभिष्ट शीघ्र केन्द्र के अंश अधिका न्यानस्य
अधिक न्यून होवे तो तदा द्वितिसंताप तव मंगल को
द्विगुणा कर बुध को त्रिभक्त ३ का भाग लेके वृहस्पति को
सांकाशका: उसी का नवमांश युक्त करके शुक्र को दश [redacted]
हताइं हुता १० से गुणा कर ६ का भाग लेके शनि को

कुभका कार्पो १ का भाग लेके आप्त दिवसे: लब्धा दिनादि

क्रमस क्रमसे वक्राद्यं वक्रा दियो के गतेष्यम् स्पात् गतेष्य

होते हैं ॥१८॥ चान्द्र (बुध के पूर्वास्तात् पूर्वास्त होने से

दस्त्र २ दिनमें परे उदय पश्चिमो दय होता है तत्परम्

उससे उपरान्त दन २२ दिनमें अनुजू गति वक्रि होता है

तत्परं उससे उपरान्त दहन ३ दिनमें तोयास्तम् पश्चिमास्त

होता है तत्परम् उससे उपरान्त दले दिने २२ दिन में अस्तं

स्पात् पूर्वास्त होता है अथ क्रमात् अथोपनकार क्रम

से द्विमा २ माहिने में उससे उपरान्त अष्टामें ८ माहिने में उससे

उपरान्त पाश्चिमवा २२ दिंन में उससे उपरान्त आंध्रेशा ८

~~महिने मैं~~ ८ दिनमे उससे उपरान्त विचरतौ केन २२ दिन
में उससे उपरांत अष्टमासे ८ महिने में भुगो तदुत रुपात
शुक्रका उसी प्रकार पूर्व पश्चिमोदय वक्र मार्गे पूर्व पश्चिमास्त
होता है १८ ॥

श्रीगणेशाय नमः

गजभानि २७० गोंकदस्त्रा २९९ शिपदहना ३२३ एते क्रमस्था यह क्रम से रखकर मेषादि त्रयाराशा मेष से मिथुन पर्यन्त विघटिका लंकोदयासु पलात्मक लंकोदय होते हैं एते एव उत्क्रमस्था इनको उत्क्रम से रखकर कर्कादि त्रयाराशा कर्क से कन्या पर्यन्त विघटिका लंकोदयासु पलात्मक लंकोदय होते हैं इमे क्रम गोत्क्रमस्थाः क्रमस्था यह क्रम उत्क्रम से स्थित जो पलात्मक लंकोदय इनमें क्रमगोत्क्रमस्थ क्रम उत्क्रम से स्थित जो चरखंड चरखंड उसको हीनान्विता हीन युक्त करने से क्रमत क्रमसे मेषादित मेष से कन्या पर्यन्त उत्क्रमतः उत्क्रमसे धवत तुलादि मीन पर्यन्त स्वदेशी उदयकाल होते हैं ॥ ३ ॥ यस्मिन् काले लग्नम् साध्यते जिस समय का लग्न साधन करना होवे तत्कालार्क उस समय के तात्कालिक सूर्य में सायन कार्य अयनांश युक्त करके उसकी राशि परिमित स्वोदय होता है आद्यों का भोग्य स्वोदय होता है सायनार्क की राशि दूर करके अंशादि ३० में हीन करने से भोग्यांश भोग्यांश

होतेहैं उसको स्वोदयघ्रा भोग्य स्वोदय से गुणा कर उसमें खखगुणा ३० का भाग लेके भोग्य काल स्यात् भोग्य काल होताहै एवं याताशो यात काल; भवेत् इसी प्रकार यातांशों से यात काल होता है भोग्य; भोग्य काल को अभीष्टनाड़ि पलेभ्य इष्ट काल के पला करके उसमें सोधित करके तदन तस्मात् ग्रहोदयात् च. जहीहि तदन्तर उसमें भोग्य स्वोदय से आघे के जितने खंड घटे उतने घटाई कि जो नघटे यह अशुद्ध स्वोदय होताहै ॥

॥ शेषं गगन गुणाघ्न ॥ शेषादि ३० से गुणाकर

हृत अशुद्ध खंड को भाग लेके फल लवाद्य स्यात् फल होताहै तत् अजादि ग्रहे अशुद्ध पूर्व सहित उस अंशा अंशादि होताहै तत् अजादि ग्रहे अशुद्ध पूर्व सहित उस अंशा दियों के राशि स्थान में मेषसे आदि अशुद्ध खंड की पूर्व राशि रखकर अद्य अयनांश हीनम् उसमें अयनांश हीन करके विलग्नं भवति लग्न स्पष्ट होताहै ॥

से. इष्टकालअल्पः स्यात्

भोग्यत: भोग्यकाल इष्टकाल[illegible]से इष्ट काल अल्प होवे तो इष्टघकात्मको को

खरामा हतात् ३० से गुणाकर उसमें स्वोदयांशाप्त युक्त सायनार्की राशि के

उदयको भागलेके लब्ध अंशादि करके युक्त जो भास्कर सूर्य है वह तनुः स्यात्

इष्टकालीन लग्नस्पष्ट होता है अर्के भोग्य सूर्य के भोग्य काल में तनोः भुक्त

कालान्वितो लग्नके भुक्त कालको युक्त करके तत: युक्तमध्योदय उसमें सायन

लग्न सायनार्क के. मध्यके उदय युक्त करने से अभीष्टकालं भवेत् अ पलात्मक

इष्टकाल होता है॥

अथपाराशरीयमहादशा:

भु	सू०	चं०	भौ०
	भो	२०	०७
१	४		
१०	०१		
१६	१३		
४४	१५		
०८	५२		
	सं० १९८०	२०००	

२
१७
०८
२०

अथयोगीनीदशा:

सी० सं० भो० पि०

मू०	भो०
	४
२	८
८	२०
	२८
	३१
३१	१९८०
२०	
	१०
	२४
	३१
	५०

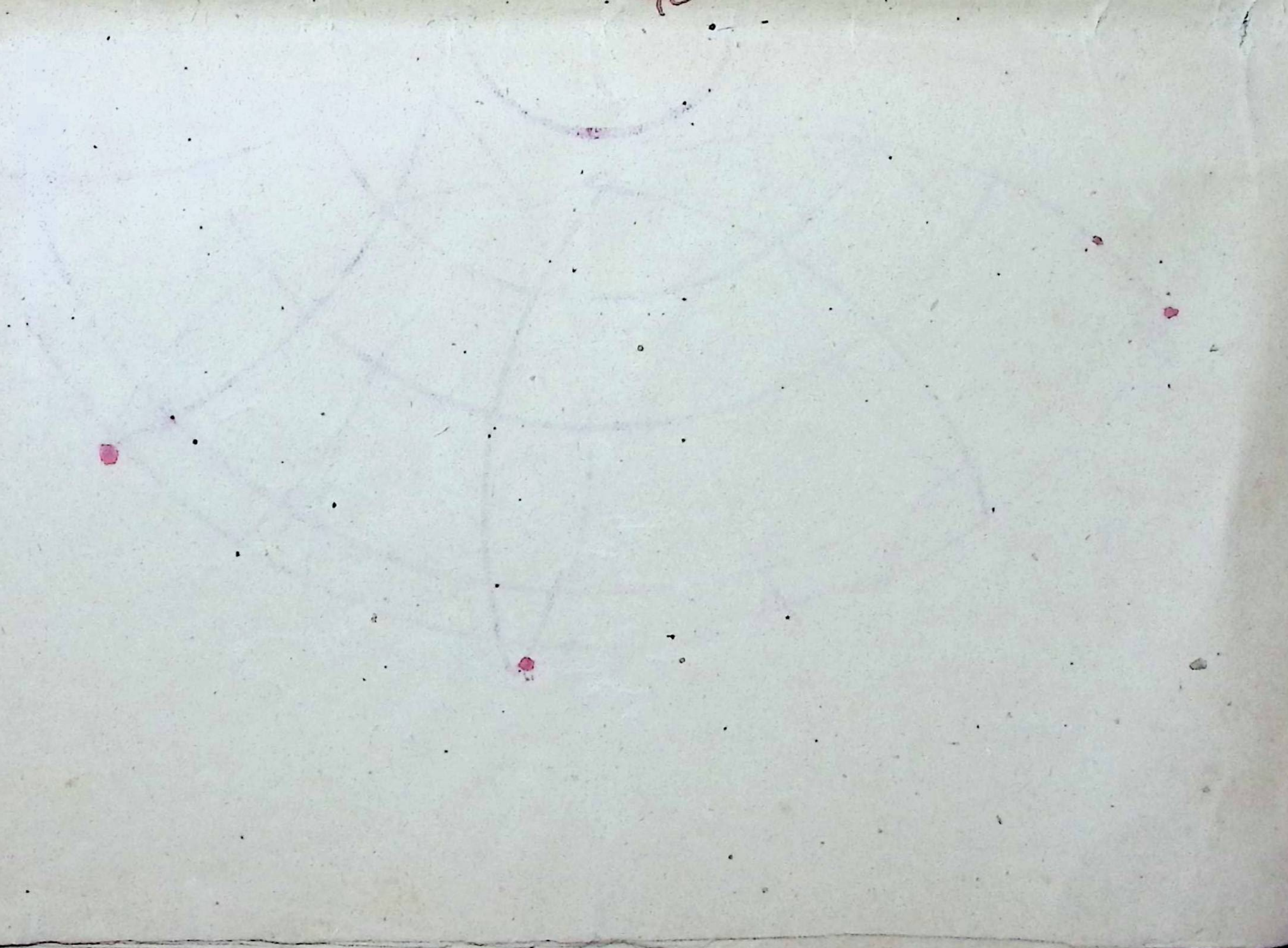

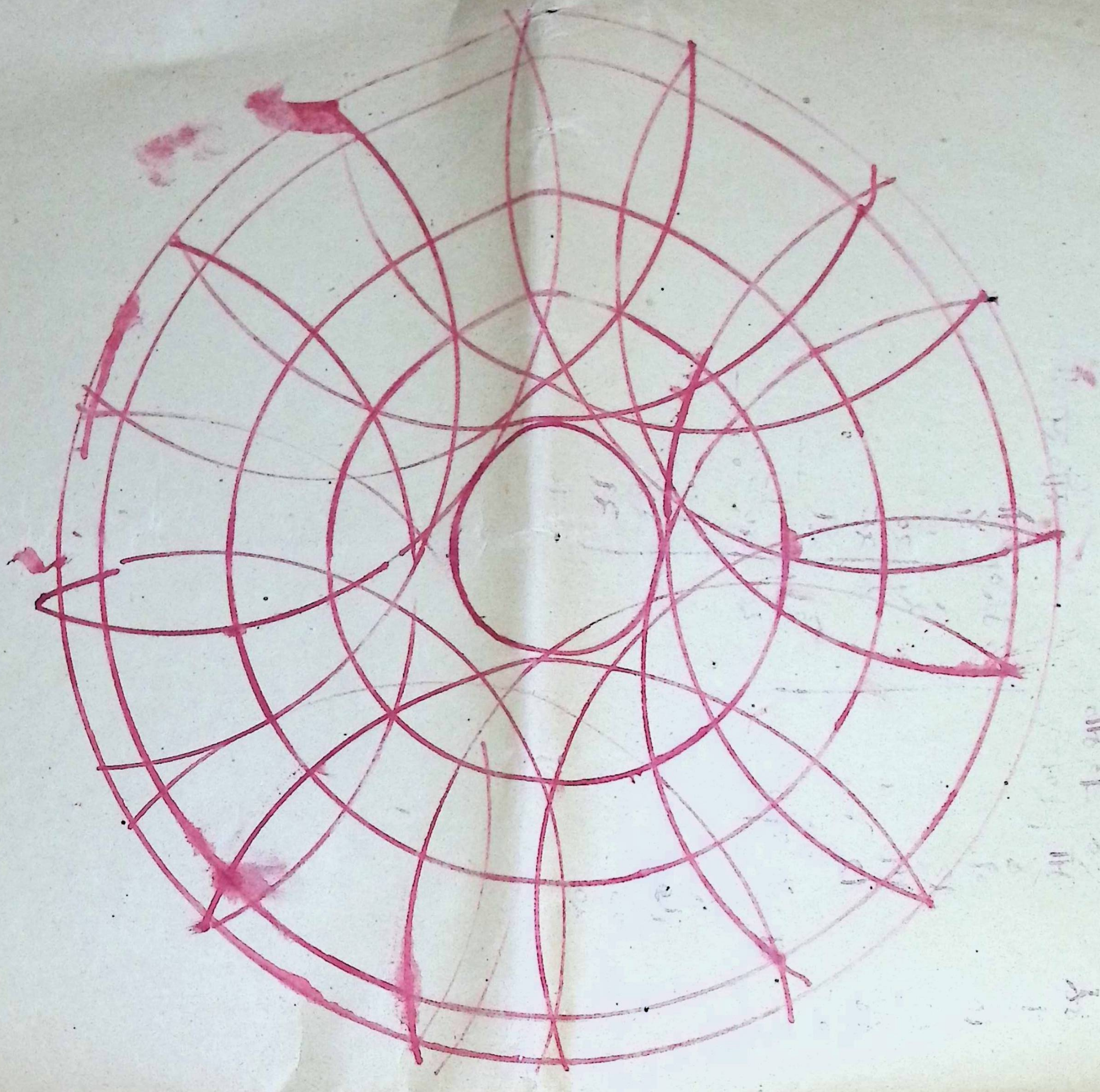

सूर्यादिस्पष्ट महासगतिका॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०
०१	५	०३	१	०१	११	८	००
०३	००	०८	२२	०१	२६	०४	२८
५३	४०	०६	२०	३७	१८	५६	२८
२८	१९	०१	०२	२४	५८	२२	४८

५७	८०४	३४	४८	१४	१६	०४	३
३८	५५	०२	५६	२०	०२	००	११
शी०	शी०	मा	उ०	अ०	मा०	व०	व०

तन्वादिभावाससंधयः

त०											
२	३	३	४	४	४	५	५	६	७	७	८
२२	४	१७	००	१२	२५	८	२५	२२	००	१७	४
१५	५२	३०	०७	४५	२२	००	२२	४५	७	३०	५२
१४	४३	२२	४०	०८	३६	११	३६	०८	४०	२२	४३
						क					
८						११					
२२						०८					
१५						००					
१४						११					

पूर्व

अनंत स्थ १५

ल	ह०
२	११
२२	०८
१५	००
१४	११

घुसके ग्रहकी गति को गत गम्य दिनानि. गत. तथा. आगामी दिनोसे आहत गुणा करके खरस प्रांशा उसमें ६०से. भाग लेके जो अंशादि लब्धि फल मिले उसको ग्रह वियुक्त युतः ग्रहमें हीन युक्त करनेसे ग्रह स्पष्ट स्पष्ट ग्रह होता है तथा उसी प्रकार घुसके ग्रहकी गतिको घटिका इष्टघटि पलसे गुणाकर खरसे लब्ध ६०से भाग लेके लब्ध कलादि ग्रहमें ऊन. संयुत कार्य धन करके तात्कालिक भवः ग्रहः स्पष्ट तात्कालिक ग्रह स्पष्ट होता है॥

इष्टसाधनम्

चैत्रे माधव-चाश्विने कृतमनु १४४ मार्गेयमस्सप्तभू १९ उर्जे फाल्गुनके षु वाणशशिनः १५८ पौषे खवाणेन्दवः ॥ माघे ज्येष्ठे श्रावण भाद्रयो शरान्निभू १३५ त्वाषाढ वारो ॥ २५ ... माघे नेत्र शरेन्दु ५२ मास ध्रुवकः शंकुध्न शष्णांगले ॥ १॥ शंकु शष्णांगन छाया सहितो भाग हारकः॥

नः

अनेनो ... स्वध्रुवः लब्धः घटिशेष पलानि च ॥ २॥

नतसाधनम् ॥

रात्रे शेषमित युतं दिनदलेना ह्नोगतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिम नतं प्रोक्तं ... चोन्नतम् ॥ यत्पूर्वो नत षड्भयुक्त रवितः पश्चान्नता दिष्पतो यत्कांकोदयकेश्च लग्न मिव तन्माध्यं स्वषड्भं स्मरम् ॥

र्केविधो हीन् हुआ है सूर्य जिसमे ऐसा जो चन्द्रमा है उसका लवा कार्यो-
अंश करके ते: यम् कीभक्ता कार्यो उसमे १२का भाग लेके फलं यात् तिथि
स्यात् जो फल मिला वह गत तिथि होति है शेषं अपियातम् शेष अंशादि
भुक्त तिथि होति है इदं इस भुक्त तिथि को हरात् १२ में श्रपतितम् हीन-
करके भोग्यम् स्यात् भोग्य तिथि होति है तयो तिन भुक्त भोग्य तिथि
यों के विलिप्ता विकला करके इस्मे अंतयो रन्तर भाजिता कार्यो सूर्य
चन्द्र स्पष्ट गति के अन्तर का भाग लेके तदा लाब्धे कमात् जव लब्धांक
नामसे यातैष्य: घटिका स्यु: तिथि के तिथि के गतैष्य घटिका होतिहै
गततिथि द्विघ्नि गत तिथि दूगण करके उसको अद्रि तष्टा ७ से तष्ट करके
शेषांक ववात: वव से आदि तिथे पूर्वार्द्धे तिथि के पूर्वार्द्ध में करण भवेत
करण होताहै सैकतनत उसमें एक युक्त करके अपर दले करणं स्यात
तिथि के उत्तरार्द्ध में करण होताहै अथ इसके उपरांत कृष्ण भूतो तरार्द्धात
कृष्ण चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध के आधेभागमें शकुनेस्य शकुनी करण होताहै

३ शेषजोवाकिवचेवहभूक्त होताहैउसभूक्तकोव ८०० मेघयनेसेआ॰
उसभुक्तभोग्यकोगगनषयूनिघ्ने ६० गुणाकर

अथ इस्के उदाल विधौ चन्द्रमा: साके सितगो साहित सूर्य चन्द्रमा तिनके
लिप्ता कलादी करके उसमें खरवाष्ठो हृता ८०० का भाग लेके फलं
क्रमात् फलं क्रमसे याते भयुती स्ता: गत नक्षत्र योग होता होगये ॥ २
गतेष्ये तिन गतेष्यों को गगन षट्‌ निघ्ने ६० से गुणा कर उसमें इन्दो-
भुक्ति हृते चन्द्र स्पष्ट गति का भाग लेके जवेष्य विहृते चन्द्र स्पष्ट गति
के योग से भाग लेके तदा क्रमात् तब क्रम से गतेष्य नाड्यः स्युः
नक्षत्र योग की: गतेष्य घटि होति है ॥ २५ ॥

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
२०																													
११								० ६ ५२	० १३ ४४	० २० ३६	० २७ २८	० ३४ २०	० ४१ १२	० ४८ ०४	० ५४ ५६	१ १ ४८	१ ८ ४०	१ १५ ३२	१ २२ २४	१ २९ १६	१ ३६ ०८	१ ४३ ०	१ ४९ ५२	१ ५६ ४४	२ ०३ ३६	२ १० २८	२ १७ २०	२ २४ १२	२ ३१ ४
~~१~~																													

श्रीगणेशाय नमः॥ अथ चलगतसारणीयन्त्र॥ पलभा: ७।२२ ग्रहलाघव॥ यन्त्रअयनांशा: २३।२७ लग्नद्या: [illegible]

अंशा:	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मे ० ° ६	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
५२	३७	४४	५१	५८	०५	१२	१९	२६	३२	३९	४६	५३	००	७	१४
	५६	४८	४०	३२	२४	१६	०८	००	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४
वृ० १	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७
	०५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४२	५०	५८
८	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	००	०४
३ °	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
मि. ९	०९	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
५८	०२	००	५९	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४०	४२	४०	३८	३६
क. ३ °	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६								
११	०८	२१	३२	४४	५६	०७	२८								
३४	४०	२४	४८	२२	००	३४	०८								
४															
५															
६															
७															
८															
९															

अंशा:	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे ० ° ६	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५२	२०	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७
	५६	४८	४०	३२	२४	१६	०८	००	५२	४४	३६	२८	२०	१३	०४
वृ० १	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९
	०६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४२	५१	५९
८	०८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	०४
३ °	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४
मि. ९	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३८	४८	५८
५८	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	०८	०६
क. ३ °															
११															
३४															
४															
५															
६															
७															
८															
९															